शोध साहित्य
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित मासिक ई-शोध पत्रिका)
वर्ष – 1
अंक - 3
जनवरी 24

कामकाजी शिक्षित महिलाओं की भूमिकाओं में अंतर्द्वंद से उत्पन्न समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

नीना चौरसिया
समाजशास्त्र विभाग
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश -

मानव की उत्पत्ति स्त्री एवं पुरुष दोनों के संयुक्त स्वरूप से हुई है मानवीय समाज के विकास में स्त्री और पुरुष दोनों ने बराबर की भूमिका निभाई है। आज के युग में नारी पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है बल्कि उनसे आगे ही है। महिलाएं घर के कामकाज देखने के - साथ बाहर भी नौकरी करती हैं उन्हें दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है।-साथ परिवार में लिंग के आधार पर काम का बंटवारा बहुत स्पष्ट और सुनिश्चित है। इस तरह दोहरी विभाजन के कारण कामकाजी औरत की जिंदगी थकावट और तनाव से भरी रहती है।

मुख्य शब्द -

कामकाजी महिला, सशक्तिकरण, समस्याएं, दोहरी भूमिका, महिला जागरूकता, भारतीय नारी, अंर्तद्वंद।

प्रस्तावना -

समाज में महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय रही है इतिहास के कालखंडों में अगर देखे तो सिर्फ वैदिक काल को छोड़कर उन्हें किसी काल में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा गया ।मध्यकाल में उनकी स्थिति काफी दयनीय रही। आजादी के बाद महिला आंदोलन में भारतीय नारियों की हिस्सेदारी ने उन्हें जीवन के नए रंग में ढलने के अवसर प्रदान किया और आजादी के बाद भारतीय संविधान में उन्हें दिए गए बराबर के अधिकार ने इस अवसर को और अधिक बढ़ाया और आज भारतीय स्त्री पुरुषों से चुनौती लेने के लिए हर क्षेत्र में जागरूक है, और सभी क्षेत्रों में अपनी उत्तम कार्य शैली का परिचय दे रही है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने कई परिवर्तन किए हैं जैसेऔद्योगिकरण -, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, लौकीकरण, भौतिकवादी विचारधारा एवं आर्थिक स्वतंत्रता आदि ने नारी को परंपराबद्ध बंधनों

से मुक्त करके व्यावसायिक क्षेत्र में ला दिया है,क्योंकि कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती हैएक - ग्रहणी तथा दूसरी भूमिका नौकरी की। घर की जिम्मेदारियां तथा नौकरी की जिम्मेदारियों के कारण उन्हें परस्पर पारिवारिक असंगतियों का सामना करना पड़ता है। जिसका प्रभाव उनकी नौकरी से संबंधित दायित्व और कर्तव्य दोनों पैर पड़ता है।

'कामकाजी महिला' शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिलाओं के लिए किया जाता है अर्थात वे महिलाएं जो घरों के बाहर नियमित रूप से व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं।काम करने का अर्थ केवल स्वयं काम करना ही नहीं बल्कि दूसरे व्यक्तियों से काम लेना भी है तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशित देना आदि भी सम्मिलित है। आज जब भारतीय नारी के लिए कामकाजी शब्द का प्रयोग किया जाता है तो वह मात्र स्कूलों, कॉलेज अथवा कार्यालय में सहज सरल ढंग से कार्य करने वाली महिलाओं तक ही - सीमित नहीं रह गया,बल्कि उद्योगधंधों -, कारखाने में वह व्यवसाय में भी कार्यरत विस्तृत हो गया है। वर्तमान में महिलाएं ऐसे कार्यों में प्रवेश कर रही हैं जिन पर पुरुषों का एकाधिकार था। आज महिलाएं न्यायालयों, उद्योगों में अस्पतालों में, स्कूल, कॉलेज में , प्रशासन में, राजनीतिक क्षेत्र में, व्यावसायिक क्षेत्र में, कला के क्षेत्र में, वैज्ञानिक क्षेत्र में कार्यरत हैं।

स्वतंत्र भारत के गत 75 वर्षों में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं उन सब का प्रभाव हमारे पारिवारिक जीवन पर पड़ा है। यह सत्य है कि देश के पिछले 75 वर्षों में शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, कृषि विकास, दूरसंचार, तकनीकी आदि क्षेत्रों में जो प्रगति की है उसे देखकर लगता है कि भारत विश्व की एक अनंत शक्ति बन चुका है। इसी प्रकार व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं लोगों का जीवन स्तर बढ़ा है और मानसिक सोच में बड़ा भारी अंतर आया है। रहनसहन-, खानपान-, पहनावा और जीवन शैली में भी बहुत बदलाव हुआ है ।कामकाजी महिलाओं की स्थिति में बदलाव तो हुआ है पर इस बदलाव से उनकी परेशानियों में कोई फर्क नहीं पढ़ रहा है। कामकाजी महिलाएं दोहरी जिंदगी जीती है उनका घर और बाहर दोनों जगह अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। इसलिए उनकी दिक्कतें भी दोगुनी होती हैं, जिसको केवल कामकाजी महिला ही समझ सकती है। अगर कामकाजी महिला नवजात बच्चे की मां है तो उनकी भूमिका तीन गुना बढ़ जाती है। इस समय भी वह महिला घर, बच्चे और ऑफिस तीनों की जिम्मेदारियों की कशमकश में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करने की बहुत अच्छे से कोशिश करती है ।शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं अधिक कामकाजी होती हैं ।'आवधिक

श्रमवल सर्वेक्षण रिपोर्ट '2017-18 के अनुसार शहरी इलाकों में 52.1% महिलाएं कामकाजी हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं का प्रतिशत लगभग 15.5% है।

कामकाजी महिलाएं घर से बाहर जो काम करती हैं वह तो सभी को नजर आता है लेकिन उनके द्वारा किए गए घरेलू कार्यों पर किसी की नजर नहीं जाती। फलतः उनके द्वारा किए गए घरेलू कार्यों को महत्व नहीं दिया जाता है। यह उनका अदृश्य श्रम होता है। सुबह जल्दी उठकर घर के काम निपटाना और पूरे दिन ऑफिस में लगे रहना, बसों में धक्के खाना, भीड़ में अश्लील बातें सुनना, शारीरिक उत्पीड़न सहना,शाम को फिर घर गृहस्ती संभालना। कामकाजी महिलाओं को परिवार और अपने पेशे के बीच सामंजस्य स्थापित करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, बेचारी कोलू के बेल की तरह जुटी रहती हैं ,हां इतना पर अवश्य है कि बाहरी कार्यक्षेत्र में उनके कार्य को महत्व दिया जाता है। बल्कि घरेलू कार्यों को तो उनका जन्मसिद्ध अधिकार समझ जाता है, जिसकी सराहना कभी भी नहीं होती है। वर्तमान में अधिकांश लड़के ऐसी लड़की से विवाह करना चाहते हैं जो घरेलू कामकाज के साथसाथ नौ-करी पेशा भी हो। परिवार में सोने का अंडा देने वाली कामकाजी बहू आर्थिक सहारा सिद्ध होती है।कई बार तो यह भी देखने में आता है कि महिला स्वयं अपनी कमाई पर भी कोई अधिकार नहीं जता पाती उसे अपने वेतन का पूरा हिसाब घर में देना होता है यदि घर में नौकर चाकर हो तो उनका वेतन ,राशन, बच्चों की फीस, दवाई ,कपड़े आदि का खर्च पूरी तरह उसके वेतन पर निर्भर करता है। कामकाजी महिलाओं की स्थिति फिर भी दयनीय है और बहुत सी समस्या उनके सामने आती है जैसे-

1. बच्चों के लालनपालन से संबंधित समस्याएं।-
2. परिवार और ऑफिस दो जगह की भूमिका निर्वहन में कठिनाई।
3. प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तौर पर आलोचना या मजाक का पत्र बना।/
4. ऑफिस में 'सेक्सुअल हैरेसमेंट' का डर।
5. अपने सहकर्मी से पर्याप्त सम्मान नहीं मिल पाना।
6. महिलाएं अधिकांशतः तथा असंगठित क्षेत्र में ही है, अतः जीवन, व्यवसाय इत्यादि की असुरक्षा तथा निम्न वेतन।
7. जैविक कार्यों के लिए भी पर्याप्त छुट्टी ना मिल पाना।(मातृत्व इत्यादि)
8. मानसिक और शारीरिक सेहत पर असर।
9. बच्चों पर प्रभाव।
10 .आवास की समस्या।
11. कार्यस्थल पर शोषण।

कामकाजी महिलाओं की समस्याओं के कारण -

1. एकल परिवार का होना।
2.बढ़ती महंगाई।
3.दोहरी भूमिका को निभाना।
4.स्वयं के लिए समय का अभाव।
5.अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा न कर पाना।

समाधान -

1. दोहरी दायित्वों की कसौटियों पर खड़ी उतारने के लिए यह जरूरी है कि कामकाजी महिला योजनाबद्ध तरीके से कम करें।
2. कामकाजी महिलाओं को गृह कार्यों में परिवार के सदस्यों की मदद लेनी चाहिए।
3. कामकाजी महिलाओं को दैनिक जीवन में योग, व्यायाम ,ध्यान लगाना तथा संगीत चिकित्सा की सहायता लेनी चाहिए।
4. पारिवारिक सदस्यों के द्वारा इन्हें भावनात्मक मानसिक एवं शारीरिक तौर पर सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
5. घर से बाहर, जैसेऑफिस-, परिवहन के साधन इत्यादि की व्यवस्था इतनी सुरक्षित एवं 'वूमेन फ्रेंडली 'हो कि वे वहां सुरक्षित महसूस करें।
6. इनकी जैविक आवश्यकताओं को देखते हुए छुट्टियों की पर्याप्त व्यवस्था हो।

संगठित क्षेत्र में तो 'मातृत्व लाभ' अब अनिवार्य हो गया है परंतु असंगठित क्षेत्र में भी ऐसी कुछ व्यवस्था हो या फिर सरकार की ओर से कुछ वित्तीय सुरक्षा दी जाए।

निष्कर्ष -

भारतीय कामकाजी महिला की स्थिति चक्की के दो परतों में घुन की तरह पिसती रहती है उसे ऑफिस और घर दोनों जगह पर अपने कार्यों के अनुसार अपनी भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। प्रत्येक कामकाजी महिला का घरेलू जीवन दयनीय होता है यह अवधारणा पूर्ण तरुण औचित्य पूर्ण नहीं है। आज भारतीय कामकाजी महिला सजकता और जिम्मेदारी से कार्यालय और घर के कार्यों को संभालते हुए घर को चलाने ,पति के भार को कम करने और सुख सुविधाओं से संपन्न जीवन के प्रति भारतीय कामकाजी महिलाओं के प्रयत्न स्तुत्य है। अर्थात उन्हें अपने घर परिवार रिश्ते नाते के साथसाथ ऑफिस सबको ठीक से चलाना - पड़ता है,और इन सब में प्रमुख है दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना क्योंकि कामकाजी

महिला की भूमिकाएं अन्य महिलाओं की अपेक्षा कुछ ज्यादा होती हैं और सभी भूमिकाओं को सही ढंग से निभाने के लिए उसके मन में एक अंर्तद्वंद चलता रहता है इस अंर्तद्वंद को पारिवारिक सहयोग के द्वारा ही सुलझाया जा सकता है क्योंकि किसी एक पक्ष को गलती से भी नजर अंदाज करने पर जीवन की गाड़ी डगमगाने लगती है।

संदर्भ सूची -

1. डॉ. प्रमिला कपूर कामकाजी भारतीय नारी राज्यपाल एंड संस, दिल्ली
२ सिंह वी एन .2010'आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण' रावत पब्लिकेशंस जयपुर
3. वर्मा, अंजलि, भारत में कार्यशील महिलाएं, ओमेना पब्लिकेशन जयपुर
4. कुमार, राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सक्सेना पुस्तकालय एवं समाज (.एस.एल), भोपाल, हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2004, पृष्ठ 4-5

SHODH
SAHITYA
शोध साहित्य